व्यावसायिक कौशल और आत्मविश्वास

डॉ. पूजा यादव (स.अ.)
उ.प्रा.वि., खुजऊपुर,
सरसौल, कानपुर नगर

उद्देश्य– उच्च प्राथमिक विद्यालय खुजऊपुर में शिक्षिका की जब नियुक्ति हुई तो वहाँ बालिकाओं का नामांकन, बालकों से कम था। विद्यालय में बालिकाओं के कम नामांकन व उपस्थिति के कारणों को गाँव के बीच जाकर जानने का प्रयास किया तो पाया कि अधिकांश अभिभावक बालिकाओं को कक्षा एक से लेकर कक्षा पांच तक तो पढ़ाना चाहते थे ताकि उन्हें साधारण जोड़, घटाना, गुणा, भाग, लिखना एवं पढ़ना आ जाए लेकिन कक्षा पांच के बाद उच्च प्राथमिक विद्यालय में बालिकाओं को भेजने में उनकी रुचि नहीं थी। उनका मानना था कि बालिकाएं विद्यालय में जाकर विज्ञान, इतिहास, भूगोल, संस्कृत सीखने की बजाय घर के वह काम सीखे जो विवाह उपरान्त उनके काम आए। अतः विद्यालय में व्यावसायिक कार्यशालाओं का आयोजन प्रारंभ किया गया, जिसमें उन्हें वह कौशल सिखाने के प्रयास किए गए जो भविष्य में जीवन के हर क्षेत्र में उनके लिए उपयोगी रहें। इन कौशल संवर्धन कार्यशालाओं से प्रभावित होकर अभिभावकों ने बालिकाओं को विद्यालय भेजना शुरू किया, जिससे बालिकाओं का नामांकन व उपस्थिति बढ़ी। नामांकन व उपस्थिति बढ़ने से हम उनके अधिगम संप्राप्ति की दिशा में भी कार्य कर पाए। विद्यालय में आयोजित इन व्यावसायिक कार्यशालाओं के द्वारा बालिकाओं को शिक्षा के साथ–साथ किसी व्यावसायिक कौशल का प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में आगे बढ़ाने तथा इसके माध्यम से बालिकाओं के विद्यालय में नामांकन, उपस्थिति को बढ़ाने का प्रयास भी किया गया।

क्रियान्वयन– विद्यालय में व्यावसायिक कार्यशालाओं के आयोजन हेतु विभिन्न कौशलों में दक्ष स्थानीय व्यक्तियों, अभिभावकों, पुरातन छात्र–छात्राओं व साथी शिक्षक शिक्षिकाओं से संपर्क किया गया। साथ ही एन0जी0ओ0 व अन्य विभागों जैसे खाद्य एवं प्रसंस्करण विभाग, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, आंगनबाड़ी केंद्र, आदि से भी संपर्क किया गया। इन सभी की उपलब्धता के अनुसार समय–समय पर विद्यालय में व्यावसायिक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें–

1. **मास्क व हैंडबैग बनाना–** इस कार्यशाला में स्थानीय अभिभावक की मदद से बच्चों ने मास्क व हैंड बैग बनाने सीखे।

2. **खाद्य प्रसंस्करण कार्यशाला–** खाद्य प्रसंस्करण विभाग द्वारा इस विद्यालय में कार्यशाला का निःशुल्क आयोजन किया गया। इसके बाद बालिकाओं को प्रमाण पत्र भी वितरित किये गये। इसमें बच्चों ने जैम व जेली, टोमेटो सॉस, स्क्वैश, चिक्की, मिक्स आचार, चटनी, गुलाब शर्बत बनाना सीखा।

3. **नॉन फायर कुकिंग कार्यशाला–** इसमें बच्चों ने सलाद, ब्रैड सैंडविच, फ्रूट रायता, भेल बनाना सीखा।

4. **कढ़ाई की कार्यशाला–** बालिकाओं ने विपस्टिच, आलसीडेज़ी, बुलियन स्टिच नोट, साटन स्टिच, काउचिंग आदि नवीन कढ़ाई की शैलियों को सीखा।

5. **पोषण सम्बन्धी कार्यशाला–** प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र व आंगनबाड़ी की सहायता से पोषण संबंधी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें बालिकाओं को मेंस्ट्रुअल हाइजीन, आयरन व फॉलिक एसिड टैबलेट्स की आवश्यकता, टीकों का महत्त्व ,बढ़ती उम्र हेतु पोषक तत्वों के महत्त्व जैसे विषयों पर चर्चा कर इन्हें वर्तमान व भविष्य के लिए सजग व सचेत करने का प्रयास किया गया।

6. **हस्त कला प्रदर्शनी–** इन हस्तकला प्रदर्शनी में बालिकाओं द्वारा कार्यशालाओं में सीखी विभिन्न सामग्रियों का प्रदर्शन किया गया। इसमें उन्होंने अपने द्वारा बनाए गए सामग्रियों को न केवल प्रदर्शित किया बल्कि समस्त ग्रामवासियों के मध्य उसे बनाने की विधि को भी साझा किया। हस्तकला प्रदर्शनी में अपने द्वारा बनाए सामग्रियों का प्रदर्शन करते हुए तथा उन सामानों को बनाने की विधि को ग्राम वासियों के मध्य साझा करते समय बालिकाओं का आत्मविश्वास देखते ही बनता था।

इसके अलावा प्राकृतिक खाद बनाना, ग्रो बैग, बंदनवार, इको फ्रेंडली पेपर बैग, मैट, फ्लॉवर मेकिंग, मेहंदी, रंगोली की भी कार्यशालायें आयोजित की गयीं। साथ ही यू–ट्यूब पर उपलब्ध ट्यूटोरियल वीडियो को प्रोजेक्टर और लैपटॉप के माध्यम से कार्यशालाओं में बच्चों को दिखाया गया और नवीन व्यावसायिक कौशलों से अवगत कराया गया।

प्रभाव– समय समय पर आयोजित होने वाली इन व्यावसायिक कार्यशालाओं में बालिकाओं की माताओं, बहनों व अभिभावकों को भी आमंत्रित किया गया। अभिभावकों ने देखा कि विद्यालय में वह कार्य भी सिखाए जा रहे हैं जो भविष्य में बालिकाओं के काम आएँगे और उनको आत्मनिर्भर बनने में सहायता करेंगें। इससे प्रभावित होकर अभिभावकों ने बालिकाओं को विद्यालय भेजना शुरू किया, जिससे बालिकाओं का नामांकन व उपस्थिति बढ़ी। आज विद्यालय में बालिकाओं की संख्या, बालकों से अधिक है। बालिकाओं ने जनपद व राज्य स्तर पर कई शैक्षिक, सांस्कृतिक व खेलकूद सम्बंधी प्रतियोगिताओं को जीता व कई पुरस्कार प्राप्त किये।

कानपुर जागरण
निजी स्कूलों को मात दे रहे जिले के ये परिषदीय विद्यालय

प्राइमरी स्कूलों से निकला हुनर का खजाना